# प्रेस विज्ञप्ति

## प्रोफ़ेसर (डा.) राजेन्द्र कुमार पाण्डेय

महानिदेशक, एन.पी.टी.आई.

डा. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रोफ़ेसर , विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) वाराणसी ने 11 जुलाई 2016 को राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान में महानिदेशक का पदभार ग्रहण कर लिया है.

डा. पाण्डेय ने आईआईटी , कानपुर से विद्युत अभियांत्रिकी में पी.एच.डी की डिग्री 1992 में प्राप्त की है तथा इंस्टीच्यूट आफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर्स (आई.ई.ई.ई.) के वरिष्ठ सक्रिय सदस्य हैं. वे पावर एंड एनर्जी सोसायटी (पीईएस), स्मार्ट ग्रिड कम्युनिटी (एसजीसी), कम्न्युकेशन सोसायटी के भी सदस्य है तथा एडवांस्ड पावर एंड एनर्जी सिस्टम के क्षेत्रो में समीक्षक व् सलाहकार के रूप में अपना अमूल्य योगदान दे रहे है. उन्हें हाई वोल्टेज डायरेक्ट करेंट (एच.वी.डी.सी) पारेषण तकनीक , फ्लेक्सिबल ए. सी. ट्रांसमिशन सिस्टम (फैक्ट्स) डिवाइस कंट्रोल , इंटेलिजेंट पावर कंट्रोल , आपरेशन आफ पावर सिस्टम इन ओपन एक्सेस में कार्य करने का 32 वर्षों का लम्बा अनुभव है.

डा. पाण्डेय इंडिया स्मार्ट ग्रिड फोरम (आई एस जी एफ ) के सदस्य है तथा डब्लू जी 1- उन्नत विद्युत पारेषण, डब्लू जी 2 -उन्नत विद्युत वितरण तथा डब्लू जी 6- नीति और विनियमन से सक्रिय रूप में जुड़े है. वे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की विभिन्न परियोजनाओ , सम्मेलनों , आमंत्रित व्याखान से सम्बंधित कई देशो अमेरिका, इंग्लैंड, चीन, कनाडा, हांगकांग की यात्रा कर चुके है. डा. पाण्डेय के 130 तकनीकी शोधपत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओ, सम्मेलनों में प्रकाशित हो चुके है.

महानिदेशक , एन पी टी आई के पद पर रहते हुए डा. पाण्डेय पर, 450 करोड की लागत से स्थापित किये जा रहे सौर उर्जा परियोजना (ग्रिड कनेक्टेड मोड). के लिए गठित हाई पावर कमेटी के अध्यक्ष पद का भी दायित्व है. इस परियोजना को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर तथा राजीव् गाँधी दक्षिणी परिसर में सोलर एनर्जी कार्पोरेशन आफ इंडिया तथा नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय के सहयोग से लगाया जा रहा है. डा. पाण्डेय विज्ञानं व् प्रद्योगिकी मंत्रालय , भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित स्मार्ट ग्रिड प्रोजेक्ट **" डिजाइन एंड डेवेलपमेंट आफ स्मार्ट एनर्जी ग्रिड आर्किटेक्चर विद एनर्जी स्टोरेज"** के प्रधान अन्वेषक भी है जिनके मार्गदर्शन में यह परियोजना बेस्कोम, सीएसटीईपी और आईआईटी -बीएचयू के सहयोग से चंद्रपुरा डिविजन , बेंगलुरु में कार्यान्वित की जा रही है जिसके मार्च 2017 तक पूरा हो जाने की संभावना है.